सबसे अधिक टांगों वाला जीव

शतपाद (सेंटीपीड) और सहस्रपाद (मिलीपीड) नाम के दो जीव होते हैं। इनके नाम बताते हैं कि इनकी क्रमशः 100 और 1000 टांगें होती हैं। मगर यह सही नहीं है। ये नाम तो सांकेतिक हैं। इनकी बहुत सारी टांगें होती हैं, यह सही है हालांकि ठीक-ठीक सौ या हज़ार हों यह ज़रूरी नहीं है।

इलेक्मे प्लेनिपस

मसलन, एक शतपाद *गोनीब्रेगमेटस प्लूरीमाइपेस* की 100 से कहीं अधिक टांगें होती हैं। इसकी टांगों की संख्या 382 है। लिहाज़ा इन्हें बहुशतपाद कहना बेहतर होगा। आज तक एक भी सहस्रपाद ऐसा नहीं मिला है जिसकी हज़ार टांगें हों। हालांकि एक प्रजाति है जो इसके काफी करीब पहुंचती है।

इलेक्मे प्लेनिपस में टांगों की संख्या 750 तक हो सकती है। ऐसा माना जाता था कि *इलेक्मे प्लेनिपस* दुनिया को अलविदा कह चुका है क्योंकि 1928 के बाद से इसे कभी देखा नहीं गया था। फिर 2005 में यह अचानक प्रकट हो गया। एक स्नातक छात्र पौल मरेक ने इसे केलीफोर्निया के सैन बेनिटो काउंटी में देखा। यह एक छोटे से इलाके में भूमिगत रहता है।

इसके लेटिन नाम का अर्थ है 'टांगों के बाहुल्य का शिखर' जो लगभग सही लगता है। इस कृमि के नर में मात्र करीब 300-400 टांगें होती हैं मगर मादा में 750 तक टांगें होती हैं। तुलना के लिए देखें कि इसकी लंबाई मात्र 3.2 से.मी. है। आज तक सबसे ज़्यादा टांगों वाला जीव प्यूर्टो रिको का *साइफोनोफोरा मिलेपेडा* रहा है। इसकी 742 टांगें होती हैं।

सोचने वाली बात तो यह है कि इन जीवों की इतनी सारी टांगें होती क्यों हैं? मरेक सोचते हैं कि हो सकता है इससे इन जीवों को कुछ फायदा मिलता होगा। जैसे हो सकता है कि ये टांगें इन जीवों को मिट्टी खोदकर हटाने में मदद करती हों। या यह भी हो सकता है कि ये इतनी सारी टांगें मात्र संयोगवश अस्तित्व में आई हों। जैसे, *इलेक्मे प्लेनिपस* में एक और शारीरिक विशेषता पाई जाती है। इसकी आंत कुंडलीकार होती है। इसके चलते आंत की सतह का क्षेत्रफल खूब बढ़ जाता है। इससे उसे अपने लगभग पोषण-विहीन भोजन में से पोषक तत्त्व सोखने में मदद मिलती है। मरेक को लगता है कि इस तरह की आंत के साथ टांगें पैकेज के रूप में मिली होंगी। ***(स्रोत फीचर्स)***